हुए भी श्रीभगवान् इनके परम ईश्वर हैं। सत्यसंकल्प परमेश्वर इस प्राकृत सृष्टि के अध्यक्ष और आधार हैं; केवल इसकी व्यवस्था अपरा प्रकृति (माया) द्वारा संचालित है। भगवद्गीता में ही श्रीकृष्ण ने अन्यत्र कहा है कि "विभिन्न रूप-योनियों वाले सम्पूर्ण जीवों का मैं पिता हूँ।" संतान-प्राप्ति के लिए पिता माता में गर्भाधान करता है। इसी प्रकार, परमेश्वर केवल अपनी दृष्टि से अपरा प्रकृति में अखिल जीवसमूह का गर्भाधान कर देते हैं, जिससे वे सभी जीव अपनी पूर्व कर्मवासना के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप-योनि ग्रहण करते हैं। अतः श्रीभगवान् का इस प्राकृत सृष्टि से सीधा सम्बन्ध नहीं है। वे केवल अपरा-प्रकृति पर दृष्टि डालते हैं; इससे वह क्रियान्वित हो जाती है, और परिणाम में तुरन्त संपूर्ण सृष्टि हो जाती है। माया पर दृष्टिपात करन के कारण श्रीभगवान् सृष्टि के निमित्त तो सिद्ध होते हैं, परन्तु प्राकृत सृष्टि से उनका सम्बन्ध प्रत्यक्ष नहीं है। स्मृति में यह दृष्टान्त दिया गया है—कुसुम की सुगंध को घ्राणेन्द्रिय ग्रहण करती है, फिर भी ये दोनों परस्पर असंग हैं। प्राकृत-जगत् और श्रीभगवान् में भी ऐसा ही सम्बन्ध है। इस जगत् से वस्तुतः असंग होते हुए भी वे दृष्टिपात करके सृजन और विधान करते हैं। सारांश में, श्रीभगवान् की अध्यक्षता के बिना अपरा प्रकृति कुछ नहीं कर सकती। तथापि, श्रीभगवान् सम्पूर्ण लौकिक क्रियाओं से असंग हैं।

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।।११।।

अवजानन्ति=उपहास करते हैं; **माम्**=मेरा; **मूढाः**=बुद्धिहीन मनुष्य; **मानुषीम्**=नराकार; **तनुम्**=विग्रह; **आश्रितम्**=नित्य प्राप्त; **परम्**=दिव्य; **भावम्**=स्वभाव को; **अजानन्तः**=न जानते हुए ; **मम**=मुझ; **भूत**=सम्पूर्ण सृष्टि के; **महेश्वरम्**=परम स्वामी (का)।

अनुवाद

मेरे नराकार में अवतरित होने पर मूर्ख मेरा उपहास करते हैं। वे मुझ परमेश्वर के दिव्य स्वभाव को नहीं जानते।।११।।

तात्पर्य

इस अध्याय के पूर्ववर्ती श्लोकों की व्याख्या से स्पष्ट है कि नररूप में अवतरित होने पर भी श्रीभगवान् साधारण मनुष्य नहीं हैं। सम्पूर्ण सृष्टि का सृजन, पालन एव सहार करने वाले श्रीभगवान् मनुष्य-तुल्य कैसे हो सकते हैं? फिर भी बहुत से मूढ श्रीकृष्ण को केवल एक शक्तिशाली मनुष्य मानते हैं। वास्तव में तो वे आदिपुरुष परमेश्वर हैं, जैसा ब्रह्मसंहिता में प्रमाण है—**ईश्वरः परमः कृष्णः।**

सृष्टि में कितने ही ईश्वर हैं, जिनमें एक एक से बडा प्रतीत होता है। प्राकृत जगत् में सामान्यतः प्रत्येक प्रशासक पर सचिव, सचिव पर मन्त्री तथा मन्त्री पर राष्ट्रपति शासन करता है। इनमें से प्रत्येक नियन्ता है; परन्तु साथ ही किसी अन्य द्वारा